भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएं

सम्पादक : डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :

पुष्पा शर्मा

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,

लोहाखान, अजमेर-305001

ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

संस्करण

प्रथम 2025

ISBN : 978 - 81 - 993854 - 7 - 4

मूल्य - 300/-

रचना -

भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक -

डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

आवरण -

श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक -

श्री श्याम ऑफसेट, किशनगढ़

भाषा अध्यापकों की अपेक्षाएँ एवं आवश्यकताएँ

डॉ. सुनीता जांगिड़
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भूमिका :

भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपनी संस्कृति व सभ्यता को विकसित करके भावी पीढ़ी तक पहुँचाया है। भाषा का विकास सामाजिक अंतक्रिया द्वारा होता है। भाषा मनुष्य के विकास की आधारशिला है शुद्ध सुसंस्कृत भाषा सुशिक्षित व्यक्ति का लक्षण है । चिरपरिवर्तनशील मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में भाषा का पर्याप्त हाथ है। ए.पेई नामक विद्वान ने लिखा भाषा की कहानी सभ्यता की कहानी है। इस प्रकार भाषा विकास बौद्धिक विकास का साधन है। पुरूषोत्तम दास टंडन ने लिखा है 'भाषा ही राष्ट्र का जीवन है' अतः भाषा शिक्षण के माध्यम से राष्ट्रोन्नति में सहायता मिलती है, भाषा से मनुष्य के आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही स्वरूपों की उन्नति होती है। डॉ जॉनसन के अनुसार भाषा विचार का परिधान है। भाषा अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन है, मनुष्य अपने भावों मनोभावों इच्छाओं आदि की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही करता है। विद्यालय जाने के साथ बालक सुसंगठित रूप से भाषा सीखना प्रारम्भ कर देता है। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का अहम् स्थान है। विद्यालयी शिक्षा में भाषा शिक्षण का उद्देश्य बच्चों में भाषायी कौशल का विकास करना है। भाषा सीखाने में भाषा शिक्षक को भाषा सही भांति समक्ष लेनी चाहिए, भाषा शिक्षण अनेक मनोवैज्ञानिक व व्यवहारिक सिद्धान्तों पर आधारित है। हेम गिनोट शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपर्याप्त साधनों के बावजूद मुश्किल लक्ष्य को हासिल कर दिखाए और उसका करिश्मा ही कई बार असम्भव कार्य को सम्भव कर दिखाता है।

विद्यालयी स्तर पर भाषा शिक्षण में शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षक अपने ज्ञान से सम्प्रेवणीय कुशलता के आधार पर विद्यार्थियों को उस ज्ञान से आत्मसात कराता है। बी.ओ. स्मिथ के अनुसार 'शिक्षण अधिगम को उत्प्रेरित करने वाली एक पद्धति है' अर्थात शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यवहारगत परिवर्तन लाना है । मनोवैज्ञानिक शिक्षण क्रिया के लिए

अधिगम के सिद्धान्तों को शिक्षण में आवश्यक माना है। रिगेट का विचार है "The art of teaching constantly changing" अर्थात शिक्षण कला निरन्तर परिवर्तित होती रहती है, शिक्षण कार्य में आवश्यकतानुसार दक्षताओं व नवाचारों का समावेश किया जाता है ताकि शिक्षण व्यवहारिक एवं गुणवतायुक्त बन सके। एन.सी.एफ (2005) भी वर्तमान परिस्थिति एवं माहौल को ध्यान में रखकर रोचक एवं आनन्दायक शिक्षण का पक्षधर है ताकि समय-समय पर छात्र की कठिनाईयों का पता लगाकर विशेष कक्षाओं में विशेष शिक्षण कर सके एवं निर्धारित समय के अन्दर बच्चों में दक्षताएँ लाई जा सके ।

शिक्षक की विद्यार्थी से अपेक्षाएं - बच्चा भाषा द्वारा रचे गए वातावरण में जीता है। बड़ा होता है उस वातावरण को बनाने में शिक्षक अपना योगदान देता है । भाषा शिक्षक विद्यार्थी के जीवन में भाषा के विभिन्न कार्य क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है तो वह बच्चे की बौधिक और भावनात्मक जरूरतों के अनुकूल कदम उठा सके। विद्यार्थी द्वारा प्रयोग की गई भाषा पर शिक्षक प्रतिभा का प्रभाव होता है। एन.सी.एफ (2005) में भाषा का आधार पत्र के पहले पृष्ठ में रहता है। पर्याप्त अवसर मिले तो बच्चा नई भाषाओं को आसानी से सीखेगा। भाषा शिक्षक विद्यालय में विद्यार्थियों को अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध करवाकर उनकी भाषागत कौशलों का विकास कर सकता है ।

विद्यार्थी अपनी शंका, संकोच व झिझक दूर कर शिक्षक से अपने अनुभव साझा करे, शिक्षक उनकी कल्पना शक्ति को समझते हुए उनकी भाषा का सम्मान करे। विद्यार्थी कक्षागत शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता बनाये अधिक से अधिक प्रश्न पूछें व अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करे। भाषा शिक्षक को विद्यार्थी के प्रति शिष्ट भाषा का प्रयोग रखना चाहिए। भाषा शिक्षण के साथ शिक्षक नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी दें। आत्मपरिष्कार की साधनें के सूत्र विषय शिक्षण के साथ जोडें शिक्षण प्रक्रिया के दौरान शिक्षक निम्न बिन्दुओं का अनुसरण कर विद्यार्थी को सीखने हेतु अभिप्रेरित करता है ।

- जिन छात्रों का सुलेख अच्छा है उसे प्रेरणात्मक वाक्य लिखवाना ।
- छात्रों को अपने बारे में बात करने का अवसर देना । स्कूली अनुभवों पर बात करना ।
- कवियों, लेखकों व महापुरूषों की तस्वीरों पर चर्चा करना।
- कहानियाँ सुनना व उन पर चर्चा करना।

भाषा शिक्षक को पूर्ण निष्ठा के साथ शिक्षण कार्य कराना चाहिए। शिक्षण आनन्ददायी रूचिपूर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिए। परंपरावादी पद्धति से हटकर

खेल विधि, क्रियात्मक पद्धति से शिक्षण करना चाहिए । विद्यार्थी जब प्राथमिक कक्षा में प्रवेश करता है तो उसके पास घरेलु तथा आसपास की भाषा का वृहत भण्डार होता है इस संदर्भ में चोमस्की का कथन है कि एक बच्चा एक सामान्य भाषाई जगत से सम्पर्क के अन्तर्निहित भी क्षमता के साथ जन्म लेता है, अत: बच्चे की अन्तर्निहित भाषाई क्षमता का समुचित रूप से प्रयोग किया जाए ।

जीवन में बच्चों का लक्ष्य स्कूल से अच्छी शिक्षा प्राप्त करना होता है वही विद्यालय में शिक्षकों का लक्ष्य बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करना है । विद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वह एकाग्र हो व्यक्तित्व के विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों में शामिल हो ।

- विद्यालय से विद्यार्थी बेहतर इंसान बनाना व मानवीय मूल्यों अपनत्व, आदर, देशहित की सोच विकसित करना।
- विद्यार्थी को संस्कृति से रूबरू कराएं व उत्तम आचरण निर्माण हेतु अभिप्रेरित करें।
- शिक्षक खेल खेल में हर दिन नया सीखाये व अपने व्यवहार से बच्चों के समक्ष आदर्श स्थापित करें।
- शिक्षक अपेक्षा करता है कि विद्यार्थी कक्षा में नियमित आये तथा कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी आनन्द प्राप्त करें व अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता दे।
- शिक्षक अपेक्षा करता है कि विद्यार्थी शिक्षक की सत्ता का सम्मान करें तथा साथी छात्रों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करें ।
- शिक्षक चाहता है कि विद्यार्थी शिक्षण समप्रत्यय व अर्थ को समझे तथा समप्रत्यय के साथ वास्तविक जीवन संबंध स्थापित करें।
- शिक्षक अपेक्षा करता है कि विद्यार्थी भाषा अधिगम द्वारा आलोचनात्मक चिन्तन बने तथा स्वयं विभिन्न प्रश्नों के उत्तर खोजे तथा विद्यार्थी कक्षा शिक्षण में सक्रिय रहें।
- शिक्षक चाहता है कि विद्यार्थी स्वयं अपनी क्षमता ताकत व कमजोरी पहचाने तथा लेखन, वाचन व पठन संबंधित त्रुटियों में सुधार करे।

शिक्षक की संस्थाप्रधान से अपेक्षाएँ- प्रत्येक विद्यालयों में शैक्षिक प्रशासन का उत्तरदायित्व मुख्य रूप विद्यालय प्रधानाचार्य/संस्था प्रधान का ही होता है । संस्था प्रधान न केवल प्रशासक के रूप में वरन् शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत, मार्गदर्शक विद्यालयी व्यवस्था का पर्यवेक्षक नीतियों को निर्धारण क्रियान्वयनकर्ता एवं मूल्याकंनकर्ता भी होता है। विद्यालय के दैनिक कार्य व्यवहार प्रशासनिक एवं

शैक्षिक नीतियों का निर्माण एवं क्रियान्वयन प्रत्यक्ष रूप से विद्यालय संस्था प्रधान पर निर्भर करता है । विद्यालय की कार्यकुशलता व्यवस्था एवं श्रेष्ठता संस्था प्रधान की व्यक्तिगत योग्यता कौशल एवं व्यवसायिक निपुर्णता पर निर्भर करती है। भाषा शिक्षक की संस्था प्रधान से भिन्न अपेक्षाएं रहती है ।

- संस्था प्रधान या प्रशासन कठिन परिस्थितियों में शिक्षक के साथ रहे कठिन परिस्थिति में शिक्षक के साथ रहे विद्यार्थी, अभिभावक से असहमति अन्य साथी अध्यापकों के साथ वैचारिक संघर्ष होने पर उनकी बात सुने उनके साथ खड़े रहे ।
- भाषा शिक्षण प्रक्रिया व परिणाम का सही सटीक मूल्याकंन कर शिक्षाक का उत्साहवर्धन करे तथा कठिन समय में आवश्यकता होने पर उन्हें सलाह भी दें।
- भाषा शिक्षक चाहता है कि संस्था प्रधान अपनी अपेक्षाएं स्पष्ट रूप से शिक्षक के समक्ष रखे व चाहते है कि विद्यालय पॉलिसी व प्रक्रिया को स्पष्ट समझायें।
- छात्रों के कल्याण तथा उनमें अनुशासन बनाये रखने के लिए आवश्यक कदम उठाए।
- संस्था प्रधान अपने विद्यालय में भाषागत गतिविधियाँ जैसे कविता पाठ, आशुभाषण, कवि दरबार, अन्ताक्षरी, वाद विवाद, एकांकी व नाटक प्रदर्शन आदि गतिविधियों के आयोजन को प्रोत्साहन देना।
- विद्यालय की प्रवृत्तियों में अभिभावकों तथा अध्यापकों का सहयोग प्राप्त करने तथा उससे सम्पर्क बनाने के लिए अभिभावक अध्यापक संघ बनाना।
- शिक्षक चाहता है कि संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि विद्यालय के सभी भाषा शिक्षक मिलजुलकर विद्यालय में भाषा संबंधित गतिविधियों का संचालन करें व उन्हें जरूरी सहयोग तथा संसाधन उपलब्ध कराये।
- विभिन्न कार्यक्रमों में भाषा शिक्षकों की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करना।
- विद्यालय पुस्तकालय में भाषा संबंधित शब्दकोश संबंधित साहित्यिक पुस्तकें, जर्नल आदि उपलब्ध कराना।
- विद्यालय में विद्यार्थियों की मौखिक / लिखित अभिव्यक्ति के विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करवाना तथा विजेता प्रतिभागियों को संस्था प्रधान द्वारा पुरस्कृत करना ।
- जिला तथा राज्य स्तर पर आयोजित होने वाले भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रमों संगोष्ठी, पत्र वाचन में विद्यालय से भाषा शिक्षक को भेजना। ताकि शिक्षक नवीन शिक्षक विधियों, प्राविधियों का उपयोग अपने शिक्षण में कर सके।

शिक्षक की समाज से अपेक्षाएँ – किसी भी समाज में शिक्षक का अपना विशिष्ट महत्वपूर्ण योगदान होता है। समाज का नेतृत्व संभालने और उसके गंभीर उत्तरदायित्वों को वहन करने योग्य शिक्षक बनाता है। शिक्षक नयी पीढ़ी का शिक्षण और मार्गदर्शन का कार्य करता है। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि भारत में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए जिससे समाज के चरित्र का निर्माण हो मन की शक्ति में वृद्धि हो बुद्धि का विस्तार हो जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। बच्चे जन्मजात भाषा क्षमता के साथ पैदा होता है।

अरोइन ने संकेत दिया कि समाज के बाहर भाषा का न तो अस्तित्व है और न ही उसका विकास होता है हमारी सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक विकास की आवश्यकताओं के कारण भाषा का विकास होता है । मानव समाज भाषा के बिना विचारों का गठन अभिव्यक्ति का संचय और प्रसारण नहीं कर सकता। क्रोशने ने कहा है कि उपलब्ध भाषा को विद्यार्थी तभी आत्मसात कर सकता है जब आस–पास के लोगों व अध्यापकों का रवैया सकारात्मक हो उसके अन्दर सीखने की प्रेरणा है । प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वायगोत्सकी ने भाषा एवं समाज का संबंध अविछिन्न माना जाता है दोनों अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर है। नई शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि शिक्षक का स्तर समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकाचार का प्रतिबिम्ब है। कोई भी समाज अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं जा सकता।

मनुष्य अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए समाज का सहारा लेता है । समाज का सहारा लेने के लिए किसी न किसी भाषा का सहारा लेना पड़ता है। ऐसी स्थिति में भाषा शिक्षक की समाज से अहम भूमिका होती है।

- शिक्षक चाहता है कि समाज में उसे सम्मानजनक स्थान मिले ।
- शिक्षक छात्रों को समयनिष्ठ बने रहने की प्रेरणा देता है व पडोसियों के साथ मधुर संबंध बनाने की प्रेरणा देता है।
- भाषा शिक्षक छात्रों को अकादमिक प्रगति के साथ–साथ सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास पर भी कार्य करता है ।
- भाषा संस्कृति की वाहक होती है शिक्षक चाहता है कि समाज बच्चों की भाषायी पकड़ पर ध्यान देंवें।
- शिक्षक समाज में परिवर्तन स्वीकार करें तथा समाज द्वारा दिए गए आवश्यक सुझाव स्वीकार करे।
- शिक्षक परिवार के बाद भाषा का सुसंगठित ज्ञान विद्यालय के माध्यम से देता है।
- शिक्षक चाहता है कि भाषा शिक्षण कक्षा कक्ष से बाहर निकालकर सामाजिक

जीवन में उपयोगी बने।

- शिक्षक चाहता है कि समाज व समाज के लोग शिक्षकों की क्षमता के ऊपर भरोसा करें।
- शिक्षक चाहता है विद्यालय के बाहर परिवार, समाज समुदाय में भी बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर मिले।
- शिक्षक चाहता है कि समाज के विभिन्न अंगों परिवार, विद्यालय समुदाय में व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा बच्चों को भाषागत शुद्ध उच्चारण करना सीखाये।
- शिक्षक प्रयास करता है कि शिक्षण विषयवस्तु सामाजिक संदर्भों में रखकर समझायी जाय ताकि छात्रों की समाज के साथ उसके संबंधों की समझ गहरी है।
- शिक्षक सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझे।
- शिक्षक समाज के प्रति अपना दायित्व समझने तथा बेहतर विश्व के लिए काम करें।
- शिक्षक चाहता है कि समाज के सदस्य अपना मिशन व विजन साझा करें तथा विद्यालय कमेटी की बैठकों में हिस्सा लें।
- शिक्षक चाहता है कि समाज के लोग शिक्षा के मूल्य को समझने तथा समाज व समुदाय में भाषा शिक्षा को भी उच्च स्थान दें।
- शिक्षक चाहता है कि समाज, समाज के विद्यालयों व शिक्षकों पर गर्व करें तथा विद्यार्थी उपलब्धि (अकादमिक खेलकूद व अन्य गतिविधियों) मनायें।

शिक्षक की अभिभावक से अपेक्षाएं - विद्यार्थियों के अभिभावक उनके हितैषी होते हैं क्योंकि विद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा उनके बच्चों के जीवन की संभावनाओं पर सीधा असर डालती है। अभिभावक व विद्यार्थी साझेदारी में कार्य करते है तो विद्यार्थियों को लाभ पहुंचाता है और उनके सफल होने की संभावना बढ़ती है विद्यालय एक संवेगात्मक जगह है जहाँ उन्हें समझना तथा उनका सम्मान होना आवश्यक है । माता-पिता अपने छोटे बच्चों को तरह-तरह अनुभव करायें अभिभावक दिनचर्या की चीजें देखना अवलोकन करना व संबंधित वस्तुओं का भाषागत ज्ञान कराये शिक्षक व अभिभावक ऐसा वातावरण प्रदान करें कि बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों व चीजों से जोड़ सके। ऐसा करने के लिए निम्न बातें सहायक होगी-

- बच्चे घर परिवार या आसपास में कई तरह की वस्तुएं देखें, एकत्रित करें तथा उनके बारे में बात कर उस पर निबंध या विचार लिखने के लिए अभिप्रेरित करें।

- बच्चों को उनके अनुभवों के बारे में कहने-लिखने और पढ़ने को कहा जाए जो स्कूल के बाहर हो।
- अभिभावक बच्चे की बौद्धिक और भावनात्मक मांगों के प्रति ध्यान दें बच्चों की मांगों को समझें उन्हें महापुरूषों की कहानियाँ, कविताएं रोचक तरीके से सुनाये जिससे बच्चे की स्मरण शक्ति, कल्पना शक्ति तर्क करले आदि बौद्धिक क्षमताओं का विकास होगा।
- अभिभावक बच्चों के दैनिक व्यवहार के उपयोग किये जाने वाले शब्दों, विलोम, पर्याय, मुहावरों व लोकोक्तियों आदि का अर्थ ज्ञान व व्यवहारिक उपयोग बताये।
- अभिभावकों प्रतिदिन बच्चों के गृहकार्य पर ध्यान देवें । उसकी कॉपियां देखें उसकी गलतियों को समझे तथा त्रुटि संशोधन करवायें।
- अभिभावक विद्यालय में आयोजित होने वाली विद्यालय प्रबन्धक समिति (एस.एम.सी.) शिक्षक अभिभावक बैठक में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें ताकि बच्चे के बारे में शिक्षक को वास्तविक फीडबैक मिल सके।
- अभिभावक विद्यालय में शिक्षक अभिभावक एडवाइजरी बोर्ड की बैठकों में भाग लेकर आवश्यक सुझाव दें।
- अभिभावक घर पर बच्चों को समय दे किसी अध्यापक का मार्गदर्शन तभी कारगर सिद्ध होगा जब अभिभावक घर पर समय निकालकर अपने बच्चों पर ध्यान देगें। घर पर अपने बच्चों के लिए समय देना आवश्यक है ।
- शिक्षक चाहता है कि अभिभावकों का सहयोग उन्हें मिले ताकि अधिक श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त किए जा सकें।
- शिक्षक चाहता है कि अभिभावक बच्चों को भाषा संबंधित व्यवहारिक बोध कराये ।
- शिक्षक चाहता है कि अभिभावक परीक्षा के समय बच्चों पर अधिक दबाव ना बनाये, अंक कम आने पर कारणों का पता लगाकर सुधारात्मक प्रयास करें।
- अभिभावक बच्चे की तुलना दूसरे भाई-बहन या पडौसी के बच्चे से ना करें। बच्चे में जो खूबियाँ है उनकी प्रशंसा करें।
- अभिभावक बच्चों को स्वस्थ वातावरण प्रदान करें। यदि बच्चों में लेखन या वाचन की विशिष्ट कुशलता है तो उसे रचनात्मक दिशा प्रदान करें ।

शिक्षक की दूरसंचार माध्यमों से अपेक्षाएं- दूर संचार माध्यम से आशय

संदेश के प्रवाह में प्रयुक्त किए जाने वाले माध्यम से है। वर्तमान समय में संचार माध्यम और समाज से गहरा संबंध है। जिसका अभिप्राय होता है। दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला संचार माध्यम है जो सम्प्रेषण और श्रोता को जोड़ते है। हेराल्ड लासवेल के अनुसार संचार माध्यम मुख्य कार्य सूचना संग्रह एवं प्रसार, सूचना विश्लेषण सामाजिक मूल्य एवं ज्ञान का सम्प्रेषण तथा लोगों का मनोरंजन करना ही भाषा शिक्षण में रेडियों टीवी विडियो, कम्प्यूटर नेटवर्क, सोफ्टवेयर, हार्डवेयर सैटेलाइट प्रणाली, विडियो कान्फ्रेंसिंग, ईमेल, ब्लाग्स, भाषा प्रयोगशाला आदि प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग कर भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है। सूचना सम्प्रेषण तकनीकी की सहायता से अमूर्त जटिल एवं सूक्ष्म बातों को मूर्त सरल एवं स्वरूपगत बनाया जा सकता है।

प्रोफेसर वेबर ने यह सिद्ध किया कि ज्ञान ग्रहण की प्रक्रिया में 40 प्रतिशत ज्ञान हम आँखों के अनुभव से 25 प्रतिशत श्रवण के माध्यम से 17 प्रतिशत स्पर्श के द्वारा प्राप्त करते हैं । ज्ञानेन्द्रिय अनुभव द्वारा ही किसी वस्तु या क्रिया का मानसिक चित्र बनता है और इस मानसिक चित्र के आधार पर ही तत्सम्बन्धी प्रत्यय बनते है। शिक्षण द्वारा ज्ञान के प्रत्यक्षीकरण एवं उसे मूर्तता प्रदान करने के लिए दूर संचार माध्यमों की आवश्यकता एवं महत्ता स्वयं सिद्ध है ।

दूर संचार माध्यमों को तीन वर्गों में बाँटा गया है-

- मुद्रित माध्यम- समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पोस्टर, जर्नल, पुस्तकें।
- इलेक्ट्रानिक माध्यम - रेडियो, टेलीविजन, टेलीग्राम, पेजर, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग, विडियो कॉलिंग
- नव इलेक्ट्रानिक माध्यम - इन्टरनेट, इमेल आदि

दूरसंचार माध्यमों के द्वारा श्रव्य दृश्य पद्धति अपनाकर भाषा शिक्षक बालक की अधिगम क्षमताओं का विकास किया जा सकता है। भाषा शिक्षण में शिक्षक को इन साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। साथ ही शिक्षक अनेक अपेक्षाएं रखता है, जो निम्नानुसार है-

- शिक्षक चाहता है कि विद्यालय में विभिन साफ्टवेयर पैकेज, सीडी, ऑडियो-विडियो उपलब्ध कराये जाये ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न लेखकों, कवियों का जीवन परिचय विभिन्न कहानियों का प्रसारण श्रव्य, दृश्य रूप किया जा सके।
- शिक्षक को आई.सी.टी. के विभिन्न साधनों के प्रभावी उपयोग हेतु अतिरिक्त प्रशिक्षण व समय दिया जाए।
- प्राथमिक कक्षाओं में वर्णमाला, अक्षर निर्माण, वाक्य निर्माण, वाक्य प्रयोग

आदि का शिक्षण प्रोजेक्टर के माध्यम कराया जा सके ताकि विद्यार्थी रूचिपूर्ण तरीके से अधिगम कर सके।

- शिक्षक चाहता है कि समय-समय पर दूर स्थित भाषा शिक्षाविदों के विचार व व्याख्यान विडियो कांफ्रेंसिंग विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध करायी जाए।
- कक्षा अनुरूप समय सारणी में विभिन्न माध्यमों से शिक्षक रटाने हेतु कालांश निर्धारित किए जाए ।
- विद्यालय में आई.सी.टी. के विभिन्न उपकरण व संसाधनों की उपलब्धता हो ताकि दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी इनसे लाभान्वित हो सके।
- शिक्षक द्वारा पाठ निर्माण, नियोजन हेतु आवश्यक ई कंटेन्ट की उपलब्धता हो जिससे शिक्षक आवश्यकतानुसार उसका उपयोग कर सके। विद्यार्थियों को कक्षा कक्ष अधिगम के साथ ई लर्निंग हेतु अभिप्रेरित करना।
- भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से छात्रों को भाषा के विभिन्न कौशलों का अभ्यास करवाया जाना।
- रेडियो, टेलिविजन आदि पर प्रसारित भाषा संबंधित व्याख्यान विद्यार्थियों को सुनाए जाने की व्यवस्था विद्यालय में करवाना।

सारांश- भाषा शिक्षा बच्चों को भावों तथा विचारों से समृद्ध करती है। उन्हें जीवन के सौन्दर्यात्मक पहलू को समझने की दृष्टि देती है । साहित्य कला तथा संगीत के जीवन में महत्व स्पष्ट करते हुए उन्हें जीवन की विविधता को समझने और सराहने का अवसर देती है।

उन्हें संवेदनापूर्ण तथा मानवीय बनाती है भाषा शिक्षक का महत्वपूर्णत स्थान है शिक्षक बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास करता है। साथ ही शिक्षक की समाज, समूदाय, विद्यार्थी, अभिभावक विद्यालय आदि से आकांक्षा व अपेक्षाएं होती है जिनकी पूर्ति होने पर शिक्षक और प्रभावी तरीके से भाषा शिक्षण करवा कर शिक्षक अधिगम के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित कर सकता है।

❑❑❑